Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 1, Jan-Feb – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 29/12/2019 Accepted on : 13/01/2020 Publication Date: 28/02/2020

उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन

डॉ. भानु प्रकाश
सहायक प्रवक्ता, शिक्षा विभाग, ज्योति कालेज ऑफ मैनेजमेन्ट, साइंस एण्ड टैक्नोलॉजी, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत
Email – prakashbhanu747@gmail.com

सारांश : प्रस्तुत शोध पत्र उच्च माध्यमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन से सम्बन्धित है। इस शोध पत्र अध्ययन में प्रार्थी ने मंजरी भाग–1, मंजरी भाग–2, मंजरी भाग–3 में पर्यावरणीय मूल्यों को जानने का प्रयास किय है उपर्युक्त अध्ययन से पता चलता है कि पाठ्यपुस्तकों में पर्यावरण से सम्बन्धित बहुत कम पाठ्यपुस्तकों का प्रयोग हुआ जिसमें बालकों में पर्यावरणीय मूल्यों का दृष्टिकोण विकसित होना अनिवार्य हो गया है।

संकेत शब्द : उच्च माध्यमिक स्तर, पर्यावरणीय मूल्य, मूल्यों का दृष्टिकोण ।

१ प्रस्तावना :

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कुछ उद्देश्य रखता है और इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कुछ आदर्शों, विचारों तथा वस्तुओं को साधन के रूप में धारण अवश्य करता है और यह पाया गया कि वस्तुयें उसके लिए कुछ मूल्य रखती हैं, जिसमें उसकी रूचि होती है। जिस पर वह पूर्ण विश्वास करता है, और जिन्हें वह सद्गुणों से मुक्त मानता है। मूल्य का अभिप्राय वस्तु या क्रिया के उस गुण से होता है जिसके द्वारा हमें आनन्द मिलता है मूल्य एक प्रकार का गुण है। जिस वस्तु से व्यक्ति को संतुष्टि होती है, वह उसे मूल्यवान दिखाई देती है। दूसरे शब्दों में मूल्य मानव के विशिष्ट लक्ष्य हैं जो अचेतन रूप से व्यक्तियों के व्यवहार का नियन्त्रण एवं निर्देशन करते हैं। वर्तमान भारतीय शिक्षा मूल्यों के संकट और ह्रास से गुजर रही है। इस वस्तुस्थिति में सुधार लाने के लिए भारतीय संस्कृति से समाज व राज्य अनुमोदित उनमूल्यों को खोजने व संकलित करने की आवश्यकता है जो सभी नागरिकों के लिए वांछनीय अनुसरणीय एवं आचारणीय हो। मूल्यों की शिक्षा के प्रति भारतीय दृष्टिकोण का विकासात्मक अध्ययन करके आधुनिक भारतीय शिक्षा का लक्ष्य और दिशा निर्धारित किया जा सकता है। भारत में प्राचीनकाल से आदर्शवादी जीवन मूल्यों तथा धार्मिकतापूर्ण जीवन की प्रधानता रही है। भारतीय शिक्षा इनसे प्रभावित हुई और उसने इन जीवन मूल्यों का संरक्षण करते हुए उन्हें आगामी पीढ़ियों को हस्तान्तरित भी किया। समाज में बढ़ती हुई कटुता और अनावश्यक मूल्यों से उत्पन्न चिन्ता ने पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यकता उत्पन्न कर दी है। जिससे भारत के सामाजिक और नैतिक मूल्यों को पर्यावरणीय मूल्यों के विकास के लिए प्रभावशाली उपकरण बनाया जा सकता है। पर्यावरणीय शिक्षा का अभिप्राय पर्यावरण के विषय में ज्ञान प्रदान करने, पर्यावरण का संरक्षण करने तथा इसके लिए किये जाने वाले उपायों की शिक्षा पर्यावरण शिक्षा के अन्तर्गत प्रकृति में पारिस्थितिकी सन्तुलन की स्थापना करने तथा प्रदूषण के नियम से सम्बन्धित विषयवस्तु का ज्ञान कराये जाने की संकल्पना निहित है। प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए पर्यावरण में भौतिक एवं जैविक अंगों को ही समाहित किया गया है। विषयवस्तु के किसी भी अंश से जहॉ भी जैविक एवं भौतिक पर्यावरण से सम्बन्धित कोई विचार, प्रकरण, संदेश, उभरता हुआ प्रतीत हुआ, उसे पर्यावरण मूल्य के रूप में अध्ययन हेतु स्वीकार कर लिया गया है। पर्यावरण के ऐसे ही तत्व, गुण, अवयक जोकि हमारे लिये धारण योग्य हो सकते हैं, मूल्यवान हो सकते है, पर्यावरणीय मूल्य कहे जा सकते हैं।

२ अध्ययन के उद्देश्य :

- पर्यावरणीय सौन्दर्य को व्यक्त करने वाले पर्यावरणी मूल्यों का अध्ययन करना।
- पर्यावरण के महत्व को दर्शाने वाले पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन करना।
- पर्यावरणीय जैवपारिस्थिति करने वाले पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन करना।
- पर्यावरण के संरक्षण के उपाय तथा पर्यावरणीय संरक्षण हेतु नियम व कानून को दर्शाने वाले विषयवस्तु एवं मूल्यों का अध्ययन।
- पाठ्यवस्तु में उपस्थित पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन करना।

३ सीमांकन :

उपर्युक्त शोध पत्र का अध्ययन केवल बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा निर्धारित उच्च प्राथमिक स्तर कक्षा 6,7,8 के लिए तीन पाठ्य पुस्तकों क्रमशः मंजरी भाग–1, मंजरी भाग–2, मंजरी भाग–3 स्वीकृत है। प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं तीन पाठ्यपुस्तकों पर आधारित है।

४ अध्ययन विधि :

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक प्रकृति का है। इसे सम्पन्न करने के लिए विषय–वस्तु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है।

५ अध्ययन की समष्टि :

प्रस्तुत शोध पत्र में बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी पाठ्यक्रम के शिक्षण हिन्दी भाषा मंजरी भाग–1, मंजरी भाग–2, मंजरी भाग–3 के नवीन संस्करणों की समस्त पठनीय विषयवस्तु को इस अध्ययन की समष्टि के रूप में स्वीकार किया गया है जिसमें तीनों पाठ्यपुस्तकों के निबन्ध, संस्मरण, रेखाचित्र, आत्मकथा, कविताएं, एंकाकी, स्ंस्कृत की सभी गद्य एवं पद्य की विषय वस्तु पठनीय अंश को सम्मिलित किया गया है। अध्ययन में सम्मिलित किये गये तीनों पाठ्यपुस्तकों के पाठों व पृष्ठों की संख्या सारणी में दी गयी है।

सारणी–1– उच्च प्रथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों के संरचनात्मक आंकड़े।

क्र.सं.	पाठ्य पुस्तकों के नाम	पाठों की संख्या	विश्लेषण पृष्ठों की संख्या	विश्लेषण शब्दों की संख्या
1.	भाषा मंजरी भाग–1	27	137	18210
2.	भाषा मंजरी भाग–2	28	130	20128
3.	भाषा मंजरी भाग–3	31	142	25112
	योग	86	409	63450

६ अध्ययन का अभिकल्प :

- अनुसंधान का प्रकार – वर्णनात्मक।
- विधि विषयवस्तु – विश्लेषण
- विधि का स्वरूप – निगमानिक विषय–वस्तु पर्यावरण के मूल्यों के विषय में।
- विश्लेषण प्रवर्ग – पॉच उद्देश्यों के आकार पर निर्मित पॉच मानकों के आधार पर विषयवस्तु का विश्लेषण।

प्रथम उद्देश्य – पर्यावरण सौन्दर्य को व्यक्त करने वाले पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन पर्यावरण की गोद में रहकर मानव पर्यावरण के सौन्दर्य को व्यक्त करता है।

द्वितीय उद्देश्य – पर्यावरण के महत्व को दर्शाने वाले पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन भौतिक एवं जैविक पर्यावरण लगभग समस्त और एक दूसरे से अन्तर्सम्बन्धित एवं एक दूसरे के लिए महत्व रखता है।

तृतीय उद्देश्य – जैव परिस्थितियों को दर्शाने वाले पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन जोकि के आपस में इस प्रकार एक तारतम्य बनाकर जीवनयापन को दर्शाने वाले प्रकरणों, विचारों को परिस्थितिकी से सम्बन्धित मूल्यों में रखा गया है।

चतुर्थ उद्देश्य – पर्यावरण के संरक्षण के उपाय तथा पर्यावरणीय संरक्षण हेतु नियम व कानून को दर्शाने वाली पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन। पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी को अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे प्रत्येक नागरिक अपने उत्तरदायित्व समझे तथा स्वच्छ पर्यावरण के लिए व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से उसमें संरक्षण हेतु प्रभावी कदम उठाये।
पंचम उद्देश्य – पाठ्यवस्तु में उपस्थित पर्यवरणीय मूल्यों को व्यक्त करने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक, जैविक, शैक्षिक आदि पर्यावरण मूल्यों को रखा गया है।

७ परिणाम–व्याख्या :

सारणी–2–

मूल्य	आवृत्ति	शब्दों की संख्या	कुल शब्दों की संख्या	प्रतिसतता
पर्यावरण सौन्दर्य	50	675	63450	1.88
पर्यावरण महत्व	36	521	63450	3.38
जैव पर्यावरण	14	368	63450	12.31
पर्यावरण संरक्षण	21	128	63450	23.60
पर्यावरणीय पाठ्यवस्तु मूल्य	18	120	63450	29.37

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्रस्तुत शोध पत्र में उद्देश्यों को ध्यान में रख कर यह ज्ञात हुआ कि पॉचों उद्देश्यों के आधार पर तीनों भागों की पाठपुस्तक में पर्यावरणीय मूल्यों का अनुपात क्रमशः 1.88, 3.88, 12.31, 23.60, 29.37 रहा जो बहुत कम पाया गया। उपरोक्त पॉचों उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से पता चलता है कि पाठ्य पुस्तक में पर्यावरण मूल्यों से सम्बन्धित बहुत कम मूल्यों का प्रयोग हुआ जिससे बालकों में पर्यावरणीय मूल्यों का दृष्टिकोंण विकसित होना अपेक्षित हो गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, मानवीय संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, मई 1986.
2. मैरिस, सी, मानवीय मूल्यों की विभिन्नताएं, चिकांगो, चिकांगो विश्वविद्यालय प्रेस, 1956.
3- Saxena A.B., Environment Education, National Psychological Corporation, Agra, First Edition, 1986.
4- Environment Challenges, Association of University – AIU House-16 Kotla Marg, & Universities, New Delhi.